ख़राब हो गया था, इसलिए जब बड़े भैया रेडियो लेकर घर आए तो उनके साथ परिवार के अन्य सदस्य भी इसे सुनने लगे। पिताजी समाचार सुनते। माँ कभी-कभी बड़े चाव से गीत सुनती। बड़े भैया से छोटे पवन भैया कई बार समाचार और गीत सुनते। मैं तो नियमित रूप से बड़े भैया और पवन भैया के साथ रेडियो सुनने लगा। उन दिनों रेडियो पर 'सिबाका गीतमाला' कार्यक्रम आता, मैंने बड़े भैया से ही इस कार्यक्रम के बारे में सुना। अमीन सयानी की जबरदस्त आवाज़ में यह कार्यक्रम हमें मंत्रमुग्ध कर देता। मुझे उस समय सिबाका गीतमाला में बजने वाले गीतों का स्मरण अब नहीं है, किंतु अमीन सयानी की आवाज़ में प्रस्तुत कार्यक्रम की स्वर लहरियों की झंकार जैसे मेरे कानों में आज भी गूँज रही हैं-'भाइयो और बहनो.....इस बार फलाना गीत इस पायदान पर है..।' हम पूरे सप्ताह इस कार्यक्रम का इंतज़ार करते। इसके अलावा हर रोज रात में 7:40 से 8:30 बजे तक बीबीसी हिंदी से समाचार प्रसारित होता। बीबीसी हिंदी के कार्यक्रमों के क्या कहने- इसमें विभिन्न ख़बरों के विस्तृत विश्लेषण सुनने को मिलते, और समय-समय पर विभिन्न साप्ताहिक कार्यक्रम भी प्रसारित होते। हम इसके अलावा विविध भारती से प्रसारित हिंदी में समाचार भी सुनते।

झारखंड में बोकारो जिला में एक जगह पड़ता है- गोमिया। मैं यहीं का रहने वाला हूँ। मैं अब तक गोमिया के बारे में ही बातें कर रहा हूँ। 1993 में मैंने दसवीं की परीक्षा दी। परीक्षा पास करने के बाद मैं आगे की पढ़ाई के लिए हजारीबाग, पटना फिर वाराणसी पहुँचा, जहाँ पर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) से मैंने एम ए और पीएचडी की। इस दौरान रेडियो का साथ लगभग बना रहा, हालांकि बीच बीच में कुछ सालों तक यह संबंध टूटा भी।

बड़े भैया ने अपना रेडियो मुझे दे दिया; अब तक उनकी नौकरी लग गई थी और रेडियो के प्रति उनका आकर्षण भी कम हो गया था। रेडियो ने मेरा साथ कुछ वर्षों तक हजारीबाग और फिर पटना में दिया। मैं पटना में अपने छोटे भाई प्रदीप के साथ रहता था, मनोरंजन के नाम पर हमारे पास एक रेडियो था; हम इसी पर आकाशवाणी से प्रसारित समाचार सुनते, बीबीसी हिंदी से प्रसारित समाचार और कभी कभी फिल्मी गीत सुनते। लेकिन फिर वह ख़राब हो गया।

मेरा रेडियो ख़राब हो गया था; लेकिन मेरा रेडियो सुनना छूटा नहीं। मैं अपने छोटे भाई के साथ एक लॉज में रहता था, इस लॉज में सिर्फ विद्यार्थी ही रहते थे। मेरे छोटे भाई ने पटना छोड़ दिया, तब मैंने अपना कमरा बदल लिया। मेरे ही लॉज में धीरज जी रहा करते थे। हम दोनों आपस में रूम पार्टनर बन गए। धीरज जी के पास एक रेडियो था। मैं अब धीरज जी के साथ ही रेडियो सुनता। रात के भोजन को सुस्वादु बनाने में हमारा साथ विविध भारती देती। विविध भारती सुनते हुए कब भोजन तैयार हो जाता पता ही नहीं चलता। धीरज जी और मेरा साथ लगभग एक वर्ष तक रहा, मैं इसके बाद 2005 में वाराणसी आ गया।

2005 में मेरा नामांकन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में एमए प्रयोजनमूलक हिंदी (पत्रकारिता) में हो गया। मेरा एमए का सत्र 2005-07 तक था। बीएचयू में पढ़ना बहुत से लोगों का ख्वाब होता है, मेरा यहाँ पर नामांकन हो गया, मैं इस बात से बहुत खुश था। मुझे यहाँ पर रहते हुए एक बात की जानकारी मिली कि एमए में अपने विषय में विश्वविद्यालय में टॉप करने पर गोल्ड मेडल मिलता है। तब मैंने अपने मन में एक लक्ष्य तय किया कि मुझे दो वर्षों तक खूब ध्यान देकर पढ़ना है, और इसलिए मैंने दो वर्षों तक विविध भारती से दूरी बना ली, मैंने नया रेडियो नहीं खरीदा। मैं हमेशा पढ़ाई के बारे में सोचता, क्लास करने विभाग जाता और क्लास से लौटने के बाद जब मेरे मित्र घूमने फिरने और गप्पें हाँकने में अपना समय बिताते, मैं पढ़ाई करता; मैं हमेशा गोल्ड मेडल के बारे में सोचता। दो वर्षों तक सतत परिश्रम का सुखद परिणाम मुझे मिला, मैं अपने क्लास में टॉप आया और फिर वर्ष 2008 में एक दीक्षांत समारोह में मुझे गोल्ड मेडल मिला।

मैं एमए करने के दौरान बीएचयू में ही बिरला-बी हॉस्टल में रहता था। एमए के बाद मुझे अपना हॉस्टल खाली करना पड़ा। इसके बाद मैंने एक कमरा किराये पर लिया। इस कमरे में हम चार मित्र एक साथ रहते थे। एक मित्र अपने साथ एक छोटा रेडियो ले आया था। 2007 में ही वाराणसी में रेडियो मिर्ची और रेडियो मंत्रा का एफ एम बैंड शुरू हुआ, शायद रेड एफ एम बैंड भी उसी वर्ष शुरू हुआ। मित्र के पास जो रेडियो था, वह डिजिटल था, यानी उसमें पहले के रेडियो की तरह मीटर की सुइयाँ नहीं थीं; इसलिए इसे सुनने में सुविधा होती थी। उस समय तक मोबाइल में भी एफ एम बैंड आ गया था; मेरे साथ रहने वाले कई लोगों के पास ऐसा मोबाइल था, जिसमें रेडियो एफ एम बैंड भी बजता था। मैंने 2006 में एक मोबाइल खरीदा था, किंतु मेरे मोबाइल में रेडियो सुनने की सुविधा नहीं थी, सिर्फ बातचीत की जा सकती थी। मैं इन मित्रों के साथ कुछ दिनों तक रहा और फिर वही माहौल शुरू हो गया जैसा पटना में धीरज जी के साथ था; यानी कि हम मिलकर भोजन बनाते और साथ में रेडियो बजता रहता। हम रेडियो के गीतों का आनंद उठाते, किंतु मुझे जो आनंद विविध भारती सुनने में आता; वह आनंद इन नये एफ एम बैंड को सुनने में नहीं मिलता था; किंतु तब भी मैं अपने मित्रों के साथ भोजन करता और एफ एम बैंड में बजने वाले नये गानों का आनंद उठाता। एक साल होते होते इन मित्रों ने कमरा छोड़ दिया, सब अपने अपने सफर के लिए निकल लिए; जिस मित्र का रेडियो था, वह जाते वक्त अपना रेडियो साथ ले गया और इसलिए कुछ समय के लिए रेडियो से मेरा संबंध टूट गया, यह संबंध दोबारा तब जुड़ा जब मैंने नया रेडियो खरीदा।

एमए के बाद मेरी इच्छा हो गई थी कि बीएचयू से ही आगे पीएच.डी. करूँ, इसलिए मैंने वाराणसी नहीं छोड़ा; और पीएच.डी. के प्रवेश परीक्षा की तैयारी करने लगा। बीएचयू में ही मेरी मित्रता अरविंद से हो गई थी। हम दोनों की ही हिंदी साहित्य खासकर कहानियों में गहरी रुचि थी। मैं